ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-12* March- 2019
Anthology : The Research

वर्तमान परिदृश्य में बुजुर्ग अस्तित्व

प्रतिभा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
पी0 जी0 कॉलेज,
दतिया (म0प्र0)

सारांश

आज स्थितियाँ बदल रही हैं। संयुक्त परिवार टूटे हैं। एकल परिवार में समय का अभाव और व्यस्तता का वर्चस्व बढ़ा है। मानवीय संवेदनाओं का क्षरण हुआ। व्यक्ति के पास समय का अभाव और व्यस्तता के प्रभाव के कारण वह स्वार्थी हुआ। इसका प्रभाव रिश्तों पर पड़ा। रिश्तों की अस्मिता खंडित हुई। रिश्ते समसामयिक हुए और वे अवसरवादिता के मोहताज हो गए। चिन्तनीयता की स्थिति में वृद्ध हैं। जो आज सुरक्षा के मोहताज हो गए।

मुख्य शब्द : वृद्ध, सुरक्षा, असुरक्षा, संवेदनाएँ, आश्रम।

प्रस्तावना

नैतिक आदर्शों और भावनात्मक रूप से ही नहीं, व्यावहारिक दृष्टि से भी वृद्ध लोग किसी समाज की अनुभव संमृद्ध सम्पदा है। उनके प्रति सम्मान समाज का दायित्व माना जाता है। जीवन भर उन्होंने जो कुछ दिया उसके प्रति बाद की पीढ़ियों का आभार सामाजिक श्रद्धा है। परिवार ने यही कर्त्तव्य बोध बनाए रखने का प्रयत्न किया है। रिश्तों को परिवार के लोगों ने आपस में बांधा है। यही भावना सामाजिक होती गई और वृद्ध लोग समाज में दयनीय नहीं आदरणीय माने गये।

संयुक्त परिवारों में वृद्धजन अपने अनुभवों की पूँजी परिवार के सभी सदस्यों, बच्चों में बाँटते थे। उससे सभी लाभान्वित होते थे। बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद अनुभव बुजुर्गों के पास होते थे। बच्चे उनसे बहुत कुछ सीखते थे और उनमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव पैदा होता था। आज दादा–दारी, नाना–नानी की बात सुनने के लिए नयी पीढ़ी के पास समय नहीं है। बुजुर्गों के पास उनके अनुभव संरक्षित रह गये हैं।

पति–पत्नी दोनों के पास अपने बच्चों के लिये ही समय नहीं तो परिवारीय बुजुर्गो के लिए तो होगा क्यों? परिवार टूटने से बुजुर्ग असुरक्षित हुए, और अपमानित हुए। वृद्धों के जीवन की मूल संपदा उनका पूरा परिवार ही होता है जिसे वे पूरे मनोयोग से बढ़ाते हैं। लेकिन जब वही परिवार उनसे किनारा करने लगता है तो उनमें अकेलापन, असुरक्षा बोध पैदा होने लगता है। वे निराश, हताश होते हैं। सारे जीवन की जमा पूंजी तो वे दे ही देते हैं, उन्हें बदले में प्यार, अपनत्व, स्नेह का संबल भी नहीं मिल पाता। बहुत कम परिवार ऐसे होंगे जिनमें बुजुर्गों का ध्यान रखा जाता होगा।

मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा कि माता–पिता को अपने बेटों से ही भरण पोषण मांगना पड़ा। कहीं–कहीं पर सम्पत्ति विवाद भी देखे गए कि बुजुर्ग माता–पिता अपनी सम्पत्ति अपने परिवारीयजनों को देना हीं नहीं चाहते क्योंकि वे उनकी देखभाल नहीं करते। यह दुःखद स्थिति है कि जो व्यक्ति अपने माता–पिता को ही बोझ मानकर अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण नहीं करता वह अन्यान्य रिश्तों में कितना ईमानदार होगा।

कहीं–कहीं पर यह देखा गया कि बुजुर्गो के लिए जो 'सुरक्षा होम' बनाए गये हैं उनमें उन्हें सुरक्षा, खान–पान, स्वास्थ्य, आर्थिक सुविधा तो हैं लेकिन वह सब उन्हें कहाँ से मिलेगा जो परिवार से ही मिलता है। चाणक्य नीति अब घरों में प्रवेश कर चुकी है लेकिन गलत रूप लेकर, गलत अर्थो में प्रयुक्त होकर। यह संवेदनाओं का टूटना ही है कि घर होते हुए वृद्धों को बाहर वृद्धाश्रम में रहना पड़ रहा है।

मैंने एक कहानी पढ़ी जिसमें एक माँ जब रोमांचित, प्रसन्न होकर अपने अमेरिका वासी बेटे के पास रहने जाती है तो बेटा उसे धोखे से किसी आश्रम में ठहरा देता है। माँ की भावनाएँ आहत होती है मगर वह उद्वेलित होकर भी कुछ कह नहीं पाती। और बेटे के बताये (झूठे मकान) आश्रम स्थान में ठहरने को विवश होती है, क्योंकि उससे कहा जाता है कि हम पति–पत्नी तो बाहर रहते हैं, आपका ध्यान कौन रखेगा। जिस घर में पति–पत्नी शाम को लौटकर आते हैं रहते हैं उसमें माँ का कोई स्थान नहीं है।

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' में माँ को एक कोठरी में बन्द कर दिया जाता है। सख्त हिदायत दी जाती है कि वे बाहर न निकलें अन्यथा उनके बेटे का प्रमोशन रूक जायेगा। माँ की कलाकारी के सामान चीफ साहब को खुश कर देते हैं जो माँ कोठरी में भूखी–प्यासी बन्द रहती है। वही माँ की कलाकृति चीफ साहब को खुश करती है। एक और कहानी में घर में बड़ा समारोह होता है माँ को उपेक्षित कर दिया जाता है। भूख उन्हें जूठे बर्तन चाटने पर विवश कर देती है। भारतीयता और बुजुर्गों का यह तिरस्कार बाहरी चका– चौंध से प्रभावित पीढ़ी अपना पुरानापन तो छिपाती ही है अपने घर के बुजुर्गों को भी छिपाती है।

क्या घर में बुजुर्गों का कोई स्थान नहीं क्या वे और उनके अनुभव नहीं पीढ़ी के साथ साझे नहीं हो सकते। हमारे यहाँ परम्पराओं का निर्वाहन बहुत अच्छी तरह से किया जाता है। जो व्यक्ति नहीं है उसके नाम से छप्पन व्यंजन खाये और खिलाये जायेंगे। लेकिन विडम्बना जीवित के साथ ही होती है क्यों? दरअसल हमारी चेतनाओं को जंग लगी है तभी आज विज्ञापन निकल रहे हैं यदि बाहर जाकर भगवान को पूजने जाना है तो घर में माता–पिता को पूजो अर्थात उनकी सेवा करो ईश्वर अपने आप मिलेगा। आज मानवता को जगाने का अलख जगाया जा रहा है। संवेदनाओं को झकझोरा जा रहा है। हम अपनी संस्कृति खोते जा रहे हैं। एक समाचार पत्र के अनुसार घर के ही पुत्र ने अपने माता पिता को महीनों बंद करके रखा था। उनके खाने पीने, स्वास्थ्य की सुविधा तो बहुत दूर की बात है। यदि हम सिर्फ मान होने का ही कर्त्तव्य पूरा कर लें तो भी वृद्धजन चाहे घर के हो या बाहर के सम्मानीय हैं।

अमेरिकी सरकार ने उन माता–पिताओं के लिए व्यवस्था की है जो वृद्धावस्था में अपने परिवारों की उदासीनता और तटस्थता के शिकार हैं। उनके लिए होम की स्थापना की गई है। अमेरिकी परिवार अपने इन वृद्धजनों से मिलने आते हैं। कहीं–कहीं प्रवासी भारतीय परिवार में भी यह स्थितियाँ पनपने लगीं हैं। चिकित्सा विज्ञान के विकास, बेहतर परिवेश, घातक संक्रामक बीमारियों का उन्मूलन और अच्छे खान–पान से जीवनावधि में वृद्धि हुई है। अब वृद्धों की संख्या पहले से अधिक है।

भारतीय परिवारों में अधिकांश वृद्ध माता–पिता साथ ही रहते हैं। बुजुर्ग होने पर वे बच्चों के उत्तरदायित्व में आते हैं। इंदिरा मिश्र अपने इंग्लैंड के प्रवास में लिखती हैं कि–सरकार ने वृद्धों के लिए होम बनवाये हैं। परन्तु वे उनमें जाने से बचते हैं। युवा वर्ग वृद्धों की जिम्मेदारी उठाने से बचता है। इसलिए वहाँ की रिवाज में यह है कि बेटा माँ से कहेगा चलो माँ चाय पीने चलें। माँ सीधेपन में चली जायेगी। बेटा उसे ओल्ड पीपल्स होम ले जायेगा। चाय पी चुकने के बाद बेटा कहेगा रूको मैं आता हूँ। इस तरह का छल माँ के साथ करके वह फिर नहीं आता है। माँ–बेटे के संबंध में वात्सल्य, मातृत्व, संवेदनायें नहीं हैं। बेटे में उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य बोध नहीं है। इसलिए सरकार ने वृद्धों के लिए दोपहर का बना बनाया खाना (मील्स ऑन व्हील्स) पहुँचाना, बाहर ले जाना और भी सुविधायें दी हैं।

अमेरिका में अवकाश प्राप्त वृद्धजन जिन्होंने सारा जीवन पैसा जोड़ा है। वे अपने पैसे से भ्रमण करते हैं। हर साल मोटर गाड़ियों से भ्रमण करते हुये लगभग पचहत्तर लाख अमेरिकियों में से एक तिहाई संख्या पचपन से ऊपर की उम्र के लोगों की होती है। यदि जिजीविषा इन वृद्धों के अन्दर है तो क्यों उन्हें उपेक्षित किया जाये।

भारतीय संस्कृति में तो ऋणों की बात की जाती है तो माता–पिता (मातृ–ऋण, पितृ–ऋण) तो

इस संस्कृति में आ सकते हैं। चाहे हम कितने ही पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित क्यों न हो जायें।

विभिन्न आयोजनों में बुजुर्गों का सम्मान किया जा रहा है। इसके लिए प्रत्येक समाज का हर वर्ग अवसर विशेष पर बुजुर्गों की उपिस्थत और उन्हें समाज में वृद्ध अनुभवी होने के लिए पुरस्कृत करते हैं। हमारे घरों के बुजुर्ग माता–पिता अनुभव से भरे होते हैं नई पीढ़ी के पास समय का अभाव, कार्यो की अधिकता के कारण व्यस्तता अधिक रहती है। प्रायः ये बड़े बुजुर्ग अपनी बात को समझाकर विस्तृत रूप से कहना चाहते हैं परन्तु अन्य सदस्यों के पास इतना समय नहीं होता कि वे उनकी हर बात को बड़े ध्यान से सुने। बुजुर्ग इससे उपेक्षित होते हैं। सामान्यतः सभी व्यक्ति उपेक्षित होने से क्रोधित होते हैं। तो बुजुर्ग तो एक लम्बा जीवन बिता चुके होते हैं। उन्हें अपनी अवमानना अखरती है।

अधिकतर बुजुर्ग बीमार होते हैं। उनका उपयुक्त उपचार नहीं होने पर वे चिड़चिड़े हो जाते हैं। आज बुजुर्गो में डिमेशिया और अल्जाइमर विकसित हो रहा है। डॉ. डेविड लेवेलिन के दल ने सर्वेक्षण में पाया कि जिन लोगों में विटामिन डी की कमी थी उनमें डिमेंशिया और अल्जाइमर की बीमारी पनपने की आशंका दोगुने से भी ज्यादा थी।

बहुधा खान–पान अनियमितता या अशुद्धता, चिंता के कारण बुजुर्गों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। यदि उन्हें घर पर विविधता के साथ स्वादयुक्त भोजन मिले तो बाहरी खाने से वे बचे रहेंगे और स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

पश्चिमी देशों की तरह भारत में भी बुजुर्ग भरण–पोषण की तरफ ध्यान दिया जा रहा है। ऐसा सुना गया है कि बुजुर्गों की शिकायत पर उनके भरण–पोषण के मसले को सुलझाया गया। पश्चिमी देश में बुजुर्गो के स्वास्थ्य, सुरक्षा, रहने की सुविधा के लिए निश्चित साधन उपलब्ध हैं।

शासकीय सेवा में सेवानिवृत्ति के पश्चात् बहुत से संस्थानों में उनके अनुभव को वरीयता देते हुए उन्हें कार्य करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। वे इस तरह से कार्य करने पर मानसिक रूप से भी सबल बन जाते हैं और आर्थिक सहायता तो उन्हें मिलती ही है। वृद्धावस्था की अपनी मनोवैज्ञानिक परेशानियाँ होती हैं। यह परेशानियाँ पारिवारिक सदस्य ही समझ सकते हैं क्योंकि जो अपनापन, भावनात्मक ध्यान पारिवारिक सदस्य से मिल सकता है वह समवर्गीय मित्र बाहरी लोगों से नहीं।

कितने दुःख की बात है कि जो व्यक्ति सारी उम्र अथक परिश्रम करके सारे परिवार को बनाता है जोड़कर रखता है। वही व्यक्ति बुढापने में दूसरे का मोहताज हो जाता है। उम्र के कारण होने वाली अशक्तता उन्हें केवल शारीरिक रूप से ही निर्बल नहीं बनाती वरन् मानसिक रूप से भी वे क्लान्त हो जाते हैं। वृद्धावस्था में उन्हें जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है वे दयनीय तो हैं ही विचारणीय भी होती हैं। अतः हमें उम्र की स्थिति देखते हुए वृद्धों के साथ सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए। ताकि वे जब शारीरिक रूप से अशक्त हों तो मानसिक संबल तो उन्हें मिलता रहे। वृद्धों को हृदय से प्रेमपूर्ण व्यवहार मिले तो वे निराशाजन्य स्थिति से उबरे रहेंगे। वृद्धों की पास पूरे जीवन की पूँजी अनुभव होते हैं। जिन्हें वे समय समय पर खर्च करते हैं। वे अनुभव हम सभी के लिए सारे जीवन भर काम आने वाले होतेहैं। आज वृद्धों के लिए पर्यटन सुविधा तैयार की गई हैं वे तीर्थयात्रा कर सकते हैं उन्हें सर्वसुविधा युक्त यात्रा के लिए अपने साथ एक सहयोगी अपने ही परिवार का ले जा सकते हैं। हालांकि उन्हें सरकारी तौर पर पूरी सुविधायें दी जाती हैं।

यात्रा सुविधा के लिए आर्थिक दृष्टि से वृद्धों को सीनियर सिटीजन यानि कम खर्च में टिकिट सुविधा दी गई हैं। जिससे वे यात्रा करने में असुविधा महसूस न कर सकें।

कुछ स्कूलों में वृद्धजनों के सम्मान की दृष्टि से कभी–कभी माता–पिता के स्थान पर दादा–दादी, नाना–नानी को बुलाया जाता है।

वृद्धों के लिए न्यू पेंशन स्कीम सरकार द्वारा योजना बनाई गई है। जो 80 सीसीडी के तहत टैक्स की बचत इस योजना के अन्तर्गत की जाती है। इस योजना में निवेश पूरी तरह सुरक्षित रहता है। और बुढापा सुरक्षित रहता है।

वृद्ध की सुरक्षा केवल परिवार ही नहीं पूरे समाज का दायित्व है। इसलिए पारिवारिक दायित्व तो मूल में है परन्तु समाज की सामूहिकता का दायित्व भी बनता है जब उन्हें होम में भेज सकते हैं तो उनकी मेहनत से बनाये होम में क्यों नहीं? संवेदनाओं को जगाया तो जा सकता है जब विदेशों में सरकार वृद्धों की देखभाल के लिए प्रयासरत है तो

हम भारत में रहकर भारतीयता को ओढ़कर अपने संस्कृति के इन चिन्ह रूपी विरासत को सँभाल सकते हैं। हमारी सरकार भी तो विविध सुविधायें देकर वृद्धों को सुरक्षित, स्वस्थ्य जीवन के लिए प्रयासरत हैं।

मध्यप्रदेश में रहने वाले बुजुर्गों की पेंशन 21 साल से नहीं बढ़ाई गई। मध्यप्रदेश देश में पहला राज्य है जहाँ सबसे कम पेंशन मिलती है। राज्य में इस समय 25 लाख पेंशनर्स ऐसे हैं जिन्हें रोज 10 रूपये से कम मिलता है। नौ लाख लोगों को तो प्रतिदिन पांच रूपये (150 रूपये मासिक) ही गुजारे के लिए मिलते हैं। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले वृद्धों को आर्थिक सहायता देने के उद्देश्य से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना संचालित की जा रही है।

संदर्भ

1. *'दो तरह के लोग'? इन्दिरा मिश्र, पृ.क्र. 67*
2. *'पत्रिका' समाचार पत्र ग्वालियर, रविवार, जनवरी 2016, पृ.क्र. 06*
3. *'पत्रिका; रविवार XPOSE 17 जनवरी 2016, पृ. क्र. 03*
4. *दैनिक भास्कर, समाचार पत्र, रविवार, ग्वालियर–7 फरवरी 2016 पृ.क्र. 02*
5. *दैनिक भास्कर, ग्वालियर, रविवार, 31 जनवरी 2016, पृ.क्र. 5*